शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मास्टर धरमदास में शिक्षा विमर्श
(नई कविता के विशिष्ट संदर्भ में)

शुभा चौधरी (शोधार्थी)
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल
डॉ. कृष्ण गोपाल मिश्र (शोध निर्देशक)
(प्राध्यापक एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष)
शासकीय नर्मदा स्नातकोत्तर महाविद्यालय
नर्मदापुरम, मध्यप्रदेश, भारत

नवीनता परिवर्तन की आवश्यक प्रक्रिया है, मनुष्य नवीनता प्रिय है। वह जीवन से जुड़े साहित्य, धरा, दर्शन आदि समस्त संदर्भों में नवीनता का अन्वेषण और सृजन करता रहता है। यही नवीनता जीवन में आनंद का कारण बनती है। इसलिए मनुष्य हर युग में नवीनता का अनुसंधान करता है। नई कविता साहित्य के धरातल पर किसी नवीनता का अनुसंधान है। डॉ. सरोजनी अग्रवाल ने नवीनता की व्याख्या करते हुए लिखा है कि - "मेरे विचार में नई कविता को उस काव्य सृजन का प्रतीक मानना चाहिए जो ऐतिहासिक व्यामोह से उबर कर समकालीन सत्यो से पूर्ण साक्षात्कार करती हुई व्यक्ति और समाज की भावी नियति को मांगलिक मूल्यों से संबद्व करने के लिए प्रयत्नषील है।"[1]

प्रख्यात साहित्यकार डॉ. देवेन्द्र दीपक की काव्यकृति 'मास्टर धरमदास' नई कविता की इस पारिभाषिक पृष्ठभूमि पर खरी उतरती है। 'मास्टर धरमदास' में उन्होंने ऐतिहासिक व्यामोह से उबरकर शिक्षा जगत के समकालीन सत्यों से पूर्ण साक्षात्कार करते हुए व्यक्ति और समाज की भावी नियति को मांगलिक मूल्यों से सम्बद्ध करने का पूरा प्रयत्न किया है ।

नई कविता की प्रवृत्तियां - अस्मिता बोध, यथार्थवादी दृष्टि, बौद्धिक चेतना का प्रसार, व्यंग्यात्मकता, आस्थामूलक जीवन दर्शन, सहानुभूति का साधारणीकरण और नवीन शिल्प विधान 'मास्टर धरमदास' के शिक्षा विमर्श को नया उत्कर्ष प्रदान करते हैं।

डॉ. देवेन्द्र दीपक ने अपने प्राध्यापकीय जीवन की अनुभूति को प्रामाणिक अभिव्यक्ति दी है, इसलिए 'मास्टर धरमदास' में कवि का मूल स्वर उसकी शिक्षकीय अस्मिता से समृद्ध है। 'मास्टर धरमदास' अपने अस्तित्व की प्रतिष्ठा और अपने व्यक्तित्व की सामाजिक सुकृति को ही अपने कवि कर्म की सार्थकता मानता है। सामाजिक विसंगतियों और विकृतियों के विरुद्ध 'मास्टर धरमदास' का मुखर स्वर उसकी अस्मिता बोध का परिचायक है तथा शिक्षा विमर्श में शिक्षकीय दायित्व का बोध कराता है।

नई कविता लघुमानव की प्रतिष्ठा के लिए भरपूर प्रयत्न करती है। नई कविता के कवियों की दृष्टि में लघुमानव का अर्थ है - चिरपरिचित अति साधारण मनुष्य जिसके जीवन संदर्भ और संवेदना आज तक उपेक्षित रही है। नई कविता के लिए मानव की महत्ता का मापदण्ड कोई कल्पित उच्च आदर्श नहीं है,

उसकी महानता की कसौटी इंसानियत है। 'मास्टर धरमदास' में लघुमानव की इसी प्रतिष्ठा के दर्शन होते हैं। धरमदास किसी साधारण विद्यालय का साधारण-सा शिक्षक है, किन्तु उसकी गहन संवेदना और जागरूक नागरिक की विचारशील चेतना उसकी महानता का उद्घोष करती है। उसकी मानवता उसे नई कविता का विषय बनाने के लिए पर्याप्त है।

'मास्टर धरमदास' में नई कविता का यथार्थबोध विशिष्ट है। इस संदर्भ में सुकवि डॉ. देवेन्द्र दीपक ने पत्रिका में इस रचना के यथार्थ को रेखांकित करते हुए लिखा है 'मास्टर धरमदास' में धरमदास के कई तेवर हैं, इसीलिए इसमें कविता है, वक्तव्य है, उद्बोधन है, बातचीत है, व्यंग्य है, नाटक है, औदात्य है, आत्मबोध है, आत्म स्वीकृति है, आक्षेप है, वकालत है, बचाव है।"[2]

आज शिक्षालय किसी दुर्घटना स्थल की यात्रा जैसे ही हो गये हैं। यहां विसंगतियां, विकृतियां और चिंतनीय अराजक स्थितियां अपना अपार विस्तार दर्शाती हैं।

'मास्टर धरमदास' में शिक्षकीय शोषण का यर्थाथ चित्रण है। प्रायः जो व्यक्ति जिस विभाग में जिस कार्य के लिये नियुक्त होता है उसी कार्य को पूर्ण करता है। अन्य दायित्वों के निर्वाह के लिये उसे बाध्य नहीं किया जाता, किन्तु शिक्षक एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जिसे अपने शिक्षण कार्य के साथ-साथ अन्य अनेक कार्य संपादित करने के लिये बाध्य किया जाता है। 'मास्टर धरमदास' के अनुसार -

"धरमदास गरीब की जोरू है
और गरीब की जोरू सबकी भौजाई।
धरमदास कान पकड़ी भेड़ है
जनगणना में धरमदास,
पशुगणना में धरमदास,
दूध दलिये में धरमदास,
शिक्षा सर्वे में धरमदास,
बैंच-मार्क में धरमदास,
और ये सब काम
बिना धन,
बिना मान,
धरमदास का पेट
रमजान"[3]

समीक्ष्य रचना में शिक्षकीय दुर्बलताओं का भी चित्रण हुआहै। आधुनिक शिक्षा जगत में अधिकांश शिक्षक अपने कर्तव्य निर्वाह से दूर गुटबाजी में व्यस्त दिखाई देते हैं। वे अपने ज्ञान को अद्यतन करने का ही प्रयत्न नहीं करते तथा अधिक से अधिक धन प्राप्त करने के लिये प्रयत्नशील दिखाई देते हैं। शिक्षा विमर्श का यह कठोर पक्ष इस प्रकार प्रकट हुआ है -

"सरस्वती पुत्र की गरिमा को भूल
लक्ष्मी की गोद में बैठने को
चंचल है मन

साधनास्थली का
जमघट गई है बन।"
x x x
पुस्तकालय के लिए नहीं समय
काफी हाउस के लिये समय
कम पड़ता है,
हमने अपने द्वार कर लिये बंद
खिड़कियों पर अंगला लगा दी है
ताजी-ताजी ज्ञानगंदी हवा का
हम क्या करेंगें ?"[4]

विद्यालयों-महाविद्यालयों में विद्यार्थियों की अनुशासनहीनता शिक्षा विमर्श के संदर्भ में एक बड़ी चुनौती है। 'मास्टर धरमदास' में इस यर्थाथ को कवि ने अनेक रूपों में अंकित किया है। आज छात्र शक्ति आतंक का पर्याय बन रही है। अनुशासनहीनता, उग्रता, हिंसा और अवांछनीय कृत्यों में विद्यार्थी अपनी शक्तियों का दुरूपयोग कर रहे हैं। 'मास्टर धरमदास' इस स्थिति से चिंतित हैं और छात्र शक्ति को सकारात्मकता की ओर मोड़ना चाहता है। छात्र शक्ति का दुरूपयोग करने वाली असामाजिक ताकतों के विरुद्ध प्रयत्न करने को प्रेरित करता है -

"कैंटीन का मालिक
होटल का बैरा
रिक्षा और टैम्पोवाला
तुम्हारे आतंक के कारण चुप है
इनकी चुप्पी एक आरोप पत्र है
इस आरोप पत्र में
मेरे लिए भी कुछ शब्द हैं
x x x
सब जगह मच रहा तुम्हारे किए का शोर
मैं जानता हूँ
ये सब उपद्रव
केवल तुम्हारा किया हुआ नहीं है
कुछ ही मछलियां हैं
जो पूरे तालाब को गंदा कर रही है
तुम एक जुट होकर
उन चंद पेशेवर मछलियों को
कांटे में क्यों नहीं फंसाते ?"[5]

'मास्टर धरमदास' में विद्यार्थियों के बिगड़ने और उदण्ड होने के कारणों पर भी गंभीर दृष्टि प्रस्तुत हुई है। 'बच्चों का राष्ट्र शिकायतनामा' शीर्षक से कवि ने बच्चों की शिकायतों पर दृष्टि दी है। 'स्कूल से लौटता बच्चा' शीर्षक काव्यांश में बच्चे के बिगड़ने के कारण और निदान प्रस्तुत किये हैं।

नकल की समस्या शिक्षा विमर्श का एक गंभीर विषय है। 'मास्टर धरमदास' में शिक्षक पहले नकल पकड़ने के कारण प्रताड़ित होता है फिर वह नकल पकड़ना बंद कर देता है, किन्तु कर्तव्य पालन न कर पाने का अपराध बोध उसे व्यथित करता रहता है -

"धरमदास ने जब परीक्षा में
नकल करते हुये एक लड़के को पकड़ा
धरमदास एक दृश्य बन गया था।
रात में धरमदास को
पता नहीं किसने क्या पढ़ा दी पाटी
कि धरमदास चतुर हो गया
उसकी बदल गई माटी।
आज उसने पकड़ी नहीं नकल।
धरमदास आज सिर्फ दर्शक था।"[6]

शैक्षिक प्रगति के प्रति प्रतिबद्धता का ढोल पीटती हुई शासकीय प्रशासकीय व्यवस्थाओं, शिक्षा क्षेत्र में भवन निर्माण उपकरण आदि सुविधाओं के लिये तो भरपूर चिंता करते हैं, किन्तु शैक्षिक उन्नयन के सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानवीय संसाधन शिक्षक, शिक्षण संस्थाओं में सुयोग्य शिक्षकों की नियुक्ति आदि की ओर प्रायः ध्यान नहीं देते, परिणामस्वरूप मानवीय संचालन संसाधन के अभाव में उपलब्ध भौतिक संसाधन निष्प्रभावी हो जाते हैं। डॉ. देवेन्द्र दीपक में नई कविता की बौद्धिक चेतना के धरातल पर इस तथ्य को अधिक स्पष्ट किया है -

"अध्यापक की चिंता किये बिना
अच्छे स्कूल चाहता है देश
स्कूल की चिंता किये बिना
अच्छा देश चाहते हैं
लोग
गुलाब नहीं
गूलर का फूल चाहते हैं लोग।"[7]

यूरोप की स्कूली शिक्षा पद्धति और लार्ड मेकाले की शिक्षा नीति के आधारभूत धरातल पर विकसित आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में यहां शिक्षक एक शासकीय अशासकीय कर्मचारी की भूमिका में नियुक्त हो रहे हैं, वहां शिक्षक शिक्षार्थी के मध्य गुरू शिष्य के पिता पुत्रत्व रागात्मक संबंधों के लिए कोई स्थान नहीं है और इस कारण शिक्षा में अपेक्षित परिणाम नहीं मिलते। डॉ. देवेन्द्र दीपक ने शिक्षा विमर्श के अंतर्गत शिक्षक-शिक्षार्थी के आत्मीय रागात्मक संबंधों को विशेष महत्व दिया है। 'मास्टर धरमदास' अपने शिष्यों के साथ रागात्मक संबंध स्थापित करते हुए उनकी सफलता की कामना इन शब्दों में करते हैं -

"मेरी आत्मा के अंशज हो तुम,
मेरी आत्मा के वंशज हो तुम,
मेरा अर्जन हो तुम
मेरी कविता हो तुम
मेरा सृजन हो तुम"
x x x
मैं धनुष की प्रत्यंचा हूँ
अपनी पूरी शक्ति से खींचो
(रखना विश्वास नहीं
टूटूंगा नहीं टूटूंगा)
चलाओं ज्ञान के तुम तीर
अज्ञान की मीन को तुम वेध डालो
सफलता की द्रोपदी का
स्वयंवर रचेगा।"[8]

इस प्रकार 'मास्टर धरमदास' आधुनिक शिक्षा विमर्श के विवधि पक्षों का यथार्थ रेखांकन होने के साथ-साथ शैक्षिक आदर्शों की ऊर्ध्वमुखी यात्रा है। जिसमें नई कविता की विविध प्रवृत्तियों को नये शिल्प विधान के साथ सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया गया है। लगभग 32 वर्ष पूर्व प्रकाशित डॉ. देवेन्द्र दीपक की यह काव्यकृति उनके कवि मन की सघन संवेदना, सामाजिक चिंता और कविधर्म के निर्वाह का सबल साक्ष्य है, जिससे उनकी रचनात्मक प्राज्ञा लोकमंगल के लिये समर्पित मिलती है।

शोध ग्रन्थ

1 अस्मिता, सम्पादक डॉ.श्रीमती सरोजनी अग्रवाल, शिक्षा प्रकाशन ग्रह, बरेली (उत्तरप्रदेश), पृष्ठ 2, प्रथम संस्करण 1986

2 मास्टर धरमदास, पूर्विका, पृष्ठ अमुद्रित डॉ. देवेन्द्र दीपक, किताबघर, 24/4866, अंसारी रोड, दरियागंज, नईदिल्ली, प्रथम संस्करण 1991 ई.

3 मास्टर धरमदास, डॉ.देवेन्द्र दीपक, पृष्ठ 27

4 मास्टर धरमदास, डॉ.देवेन्द्र दीपक, पृष्ठ 24

5 मास्टर धरमदास, डॉ.देवेन्द्र दीपक, पृष्ठ 29-31

6 मास्टर धरमदास, डॉ.देवेन्द्र दीपक, पृष्ठ 37

7 मास्टर धरमदास, डॉ.देवेन्द्र दीपक, पृष्ठ 66

8 मास्टर धरमदास, डॉ.देवेन्द्र दीपक, पृष्ठ 18